# प्रथम विश्वयुद्ध के कारण (Causes of the first World War)

* (28 जुलाई, 1914 to 11 नवम्बर, 1918)
* इसमें 37 देशों ने भाग लिया।
* युद्ध के विल्सन, लायड जार्ज (E), ...

## B.A. II (History, Hon's)

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में लड़े गए प्रथम महायुद्ध के सम्बन्ध में प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइड ने अपना विचार किया है। उन्होंने युद्ध के सामान्य कारणों की व्याख्या करते हुए बतलाया था कि युद्ध के मुख्यतः दो कारण होते हैं। (A) मौलिक एवं (B) तात्कालिक। प्रथम विश्वयुद्ध भी इससे अलग नहीं था।

(A) मौलिक कारण (Fundamental Causes)- कुछ ऐसे कारण थे जो पिछले कुछ वर्षों से यूरोपीय राजनीति के कारण उत्पन्न हुए थे, और जिसने धीरे-धीरे यूरोपीय देशों को युद्धभूमि तक पहुँचा दिया, वे निम्न थे-

(1) गुप्त संधियाँ (Secret Alliance)-

प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण गुप्त-संधियाँ थी जिसका जन्मदाता जर्मन चांसलर बिस्मार्क था। उसने जर्मनी का एकीकरण करने के बाद जर्मनी की सुरक्षा का पक्षपाती था। चूँकि जर्मनी-एकीकरण के सिलसिले में उसने फ्रांस से एल्सेस के प्रान्त लौटाने के सन्देश प्राप्त कर लिए थे, अतः उसे विशेष भय फ्रांस से था। अतः इस बीच उसकी नीति रही कि राष्ट्रों के बीच गुप्त संधियाँ करके फ्रांस को मित्रविहीन और कमजोर बनाया जाय।

1879 ई० में जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी के मध्य एक गुप्त संधि हुई, जिसमें आगे चलकर 1882 ई० में इटली भी शामिल हो गया जिसके कारण त्रिगुट का जन्म हुआ। रूस, फ्रांस का मित्र हो सकता था। यही कारण था कि बिस्मार्क ने रूस को भी अपनी ओर मिलाने का यथासम्भव प्रयत्न किया। लेकिन 1890 ई० में बिस्मार्क के पतन होते ही, फ्रांस और रूस का सम्बन्ध अच्छा हो गया और 1894 ई० में फ्रांस और रूस का भी समझौता हो गया।

अभी तक इंग्लैण्ड अपनी शानदार 'पृथकता की नीति' की दुहाई देते हुए यूरोपीय गुटबंदी से अलग था किन्तु, जब उसने देखा कि यूरोप के महान राज्य आपस में समझौता कर रहे हैं तो वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह भी मित्रों की खोज में निकल पड़ा। उसने सर्वप्रथम जर्मनी से समझौता करना चाहा, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। तत्पश्चात उसने 1902 में जापान, 1904 में फ्रांस के साथ समझौता कर लिया, फलस्वरूप एक दूसरे त्रिगुट (Triple Entente) का जन्म हुआ, जिसमें 1907 में रूस भी शामिल हो गया।

Scanned with CamScanner

* इसमें 37 देशों ने भाग लिया।
* वुडरो विल्सन, लायड जार्ज (E), जार्ज क्लीमेंशो

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में लड़े गए प्रथम महायुद्ध के सम्बन्ध में प्रसिद्ध
यूनानी इतिहासकार थ्यूसीडाइड ने अपना विचार दिया है। उन्होंने युद्ध के
सामान्य कारणों की व्याख्या करते हुए बतलाया था कि युद्ध के मुख्यतः
दो कारण होते हैं। (A) मौलिक एवं (B) तात्कालिक। प्रथम विश्वयुद्ध भी
इससे अलग नहीं था।

(A) मौलिक कारण (Fundamental Causes) – कुछ ऐसे कारण थे जो पिछले
कुछ वर्षों से यूरोपीय राजनीति के कारण उत्पन्न हुए थे, और जिसने
धीरे-धीरे यूरोपीय देशों को युद्धभूमि तक पहुँचा दिया, वे निम्न थे–

1) गुप्त संधियाँ (Secret Alliance) –
प्रथम विश्वयुद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण गुप्त-संधियाँ थी जिसका जन्म-
दाता जर्मन चांसलर बिस्मार्क था। उसने जर्मनी का एकीकरण करने के बाद
जर्मनी की सुरक्षा का पक्षपाती था। चूँकि जर्मनी-एकीकरण के सिलसिले में
उसने फ्रांस से एल्सेस के प्रान्त लौटाने के सन्देश प्राप्त कर लिए थे,
अतः उसे विशेष भय फ्रांस से था। अतः इस बीच उसकी नीति
रही कि राष्ट्रों के बीच गुप्त संधियाँ करके फ्रांस को मित्रविहीन
और कमजोर बनाया जाय।
1879 ई० में जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी के मध्य
एक गुप्त संधि हुई, जिसमें आगे चलकर 1882 ई० में इटली
भी शामिल हो गया जिसके कारण त्रिगुट का जन्म हुआ। रूस
फ्रांस का मित्र हो सकता था। यही कारण था कि बिस्मार्क ने रूस
को भी अपनी ओर मिलाने का यथासम्भव प्रयत्न किया। लेकिन 1890
ई० में बिस्मार्क के पतन होते ही, फ्रांस और रूस का संबन्ध
अच्छा हो गया और 1894 ई० में फ्रांस और रूस का भी समझौता
हो गया।

अभी तक इंग्लैण्ड अपनी शानदार 'पृथकता की नीति' की दुहाई देते
हुए यूरोपीय गुटबंदी से अलग था किन्तु, जब उसने देखा कि यूरोप के
महान राज्य आपस में समझौता कर रहे हैं तो वह अपने अकेलेपन
को दूर करने के लिए वह भी मित्रों की खोज में निकल पड़ा।
उसने सर्वप्रथम जर्मनी से समझौता करना चाहा, किन्तु उसे सफलता
नहीं मिली। तत्पश्चात उसने 1902 में जापान, 1904 में फ्रांस के
साथ समझौता कर लिया, फलस्वरूप एक दूसरे त्रिगुट (Triple Entente)
का जन्म हुआ, जिसमें 1907 में रूस भी ~~शामिल~~ शामिल हो
गया।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार जर्मनी ने टर्की को अपनी ओर मिला लिया। इन संधियों के कारण समस्त यूरोप के महान राष्ट्र दो भागों में बँट गये। एक ओर इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस और जापान थे तो दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया-टर्की और इटली थे। दोनों दल एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते थे। ऐसी स्थिति में एक छोटी सी घटना भी युद्धाग्नि को प्रज्वलित करने के लिए चिंगारी का काम कर सकती थी।

2) उग्र राष्ट्रीयता (Militant Nationalism) - उग्र राष्ट्रीयता भी प्रथम विश्वयुद्ध का एक अन्य कारण थी जो यूरोप के लिए एक अभिशाप सिद्ध हुई। ऐसी राष्ट्रीयता के दो पक्ष होते हैं। एक पक्ष में वह लाभदायक होती हैं और परतंत्र देशों को स्वतंत्र बनाती है। इटली और जर्मनी का एकीकरण इसी राष्ट्रीयता के कारण सम्भव हो सका।

इसका दूसरा पक्ष विनाशकारी है। इसी कारण 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ। जिस समय इसका नशा किसी राष्ट्र पर चढ़ता है तो उसके व्यक्ति यह समझने लगते हैं कि संसार में वे सर्वश्रेष्ठ हैं। उनकी सभ्यता, धर्म, परंपरा और भाषा संसार भर में सबसे उन्नत हैं। वे विश्व भर में अपने प्रभाव का विस्तार करके अन्य जातियों को सभ्यता का पाठ पढ़ाना चाहते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व इस प्रकार की उग्र राष्ट्रीयता का नशा जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि शक्तिशाली देशों पर ही नहीं वरन् बाल्कन प्रायद्वीप के यूनान, सर्बिया इत्यादि छोटे-छोटे देशों पर भी चढ़ चुका था और वे बृहत्-यूनान, बृहत्-बल्गेरिया तथा बृहत्-सर्बिया आदि के स्थान लेने लगे थे। इस प्रकार एक तरफ यूरोप के अनेक राज्य उग्र राष्ट्रीयता की भावना में बहे जा रहे थे तो दूसरी ओर पोल, चेक, स्लाव आदि अनेक जातियाँ भी, जो यूरोप में विद्यमान थीं, जिनकी राष्ट्रीय आकांक्षा पूर्ण न होकर यूरोप में अशांति उत्पन्न कर रही थीं। जर्मनी और इटली के लोग अपने को सर्वाधिक श्रेष्ठ और सभ्य मानते थे। इस प्रकार विभिन्न देशों की यह मान्यता कि उनकी सभ्यता श्रेष्ठ है - ने उन्हें एक दूसरे का बैरी बना दिया। राष्ट्रीयता का यह रूप खतरनाक सिद्ध हुआ और अनेक राष्ट्र आपस में लड़ पड़े, जिसमें संसार पिस गया।

Scanned with CamScanner

(3) साम्राज्यवाद -(Empirilism)- औद्योगिक क्रान्ति ने यूरोपीय राष्ट्रों को समृद्धशाली बनने की महत्त्वकांक्षा से प्रेरित किया। इस प्रेरणा को कार्यान्वित करने के लिए उन्हें पिछड़े हुए देशों पर अधिकार अथवा संरक्षण चाहिए था, क्योंकि इसके बिना कच्चा माल प्राप्त करना और तैयार माल को खपाना असम्भव था। कच्चे माल और मण्डियों के लिए जो खींचातानी शुरु हुई, उसे 'नियो मर्केण्टिलिज्म (Neo-Mercantilism) भी कहा जाता है। इसके अलावा, सैनिक सुरक्षा, अतिरिक्त आबादी को बसाने का साधन और पिछड़े लोगों को सभ्य बनाने की बात साम्राज्यवाद के विकास के मूल कारण थे।

साम्राज्यवाद की इस दौड़ में ग्रेट-ब्रिटेन सबसे आगे रहा। कनाडा, आस्ट्रेलिया, भारत, न्यूजीलैण्ड, अफ्रीका एवं एशिया के अन्य कई देशों पर उसका राजनीतिक प्रभुत्व कायम हो चुका था। उसके साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था. और अपनी नौ-शक्ति की श्रेष्ठता के कारण समुद्र की लहरों पर उसका अबाध्य नियन्त्रण था। फ्रांस ने भी अफ्रीका एवं एशिया में अपने साम्राज्य का काफी विस्तार कर लिया था। रूस ने संपूर्ण उत्तरी एशिया पर अपना अधिकार जमा लिया था और निकट-पूर्व तथा मध्य पूर्व में भी अपने पैर पसार रहा था। यूरोप के अन्य छोटे राष्ट्रों - हॉलैण्ड, बेल्जियम, स्पेन, पुर्तगाल आदि ने भी अपने से कई गुने अधिक क्षेत्रफल वाले प्रदेशों पर प्रभुत्व जमा रखा था। साम्राज्यवाद की इस दौड़ में जर्मनी और इटली सबसे अन्त में सम्मिलित हुए, अतः उन्हें अफ्रीका में कुछ प्रदेशों तथा छोटे-छोटे द्वीपों के अतिरिक्त और अधिक भू-भाग प्राप्त न हो सका। इसीलिए जर्मनी को अन्य साम्राज्यवादी देशों, विशेषकर इंग्लैण्ड तथा फ्रांस से जलन होने लगी। इसका एक कारण और भी था। जर्मनी ने अब तक औद्योगिक विकास, कृषि, व्यापार तथा वैज्ञानिक खोज आदि में भारी उन्नति कर ली थी और उसका उत्पादन काफी तेजी से बढ़ रहा था। इसको खपाने के लिए इसके पास आवश्यक उपनिवेश नहीं थे। इसके लिए पुराने साम्राज्यवादी देशों के उपनिवेश हड़पना अथवा उन उपनिवेशों में अपना प्रभाव स्थापित करना आवश्यक था। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर जर्मनी ने बर्लिन-बगदाद रेलमार्ग की योजना बनाई, जिससे संघर्ष और बढ़ गया। वस्तुतः साम्राज्यवाद ने यूरोपीय शक्तियों के मध्य तनाव और

Scanned with CamScanner

वैमनस्य को बढ़ावा देकर प्रथम महायुद्ध का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

(4) शस्त्रीकरण के लिए होड़ (Armament Race) - महायुद्ध का एक प्रमुख कारण शस्त्रीकरण के लिए होड़ थी। 1870 ई० में जर्मनी के हाथों पराजित होने के बाद से ही फ्रांस ने बड़े पैमाने पर अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत बनाने का प्रयास शुरु कर दिया, जिससे जर्मनी पर बुरा प्रभाव पड़ा और उसने भी अपनी सैन्य-शक्ति का विकास जारी रखा। दोनों ही देश ~~अपनी~~ एक-दूसरे की सैन्य वृद्धि को शंका की दृष्टि से देखते थे। इस प्रवृत्ति ने यूरोप के अन्य देशों को भी प्रभावित किया और वे भी शस्त्रीकरण की ओर अग्रसर हुए। जब कैसर विलियम द्वितीय ने जर्मन नौ-सेना के विकास की तरफ विशेष ध्यान दिया तो इंग्लैण्ड भी इस प्रतिस्पर्द्धा में सम्मिलित हो गया। परिणाम यह निकला कि यूरोप का वातावरण विषाक्त हो गया। चारों ओर संदेह, भय तथा घृणा का वातावरण फैल गया। प्रत्येक देश अपनी सैन्य वृद्धि को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का सवाल मान बैठा और ऐसी स्थिति में सैनिक अधिकारियों को अपनी-अपनी सरकारों पर हावी होने का अवसर मिल गया। इस मानसिक स्थिति को ही 'सैनिकवाद' कहा जाता है। इस प्रकार दिनों-दिन बढ़ते हुए युद्ध के उपकरणों के कारण आशंका और तनाव का बढ़ना अनिवार्य हो गया, जो पड़ोसियों के सौम्य-सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार के लिए आवश्यक होता है।

5) अन्य कारण → प्रथम महायुद्ध के मौलिक कारणों में एक समाचार-पत्रों द्वारा लोकमत को उकसाने का था। ऐसा लगभग सभी देशों के समाचार-पत्रों ने किया। उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं को उत्तेजित किया और दूसरे देशों की नीतियों के बारे में गलत प्रचार किया। इतना ही नहीं, समाचार-पत्रों ने शान्ति कायम करने वाली बातों को दबाने का भी काम किया। आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड की हत्या के बाद आस्ट्रिया और सर्बिया में जो जबरदस्त तनाव पैदा हो गया था, उसमें अखबारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही थी। इतिहासकार शेपीरो के अनुसार प्रजातंत्र की भिन्नता और निरंकुश शासकों की उपस्थिति भी इस महायुद्ध का एक कारण बन गई। रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, तथा टर्की में निरंकुश शासक थे। इन शासकों

ही ~~सर्व~~ परिवर्तनशील नीतियों के कारण सम्पूर्ण यूरोप की शान्ति खतरे में थी। उनका मानना है कि यदि इन राज्यों में निरंकुश शासन-व्यवस्था नहीं होती तो शायद महायुद्ध इतना जल्दी घटित नहीं होता।

~~(6) तत्कालीन कारण — यूरोप में तनाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। युद्ध की सम्भावनायें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, एवं बाल्कन में विस्फोट के सभी चिन्ह दिखाई दे रहे थे।~~

(6) तात्कालीन कारण- 28 जून, 1914 ई० के दिन संपूर्ण संसार आस्ट्रिया के युवराज आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड तथा उसकी पत्नी की हत्या के समाचार से विचलित हो उठा था। युवराज और ~~उसकी पत्नी को~~ उनकी पत्नी को बोस्निया की राजधानी सेराजोवो की सड़क पर कत्ल कर दिया गया। इस हत्या का उद्देश्य राजनीतिक था। हत्या के अपराधी दो बोस्नियन थे, जिन्हें आस्ट्रिया की स्लाव नीति पसन्द नहीं थी। आस्ट्रिया का दृढ़ विश्वास था कि यह हत्या सर्बिया सरकार की सहायता से की गई है और उसे इस हत्या के षड्यन्त्र की पूरी जानकारी थी। युद्धोपरान्त की गई जाँच से इतना तो स्पष्ट हो गया कि सर्बिया के कुछ उच्च अधिकारियों को हत्या के षड्यन्त्र की जानकारी थी, परन्तु इसमें सर्बिया सरकार का किसी प्रकार का सहयोग नहीं था। आस्ट्रिया ने सर्बिया को भयंकर दण्ड देने और सम्भव हो सके तो उसका अस्तित्व ही मिटा देने का निश्चय कर लिया। आस्ट्रिया को यह भी मालूम था कि 1908 की भाँति इस बार भी रूस सर्बिया की सहायता के लिए तैयार रहेगा, अतः आस्ट्रिया ने रूस के विरुद्ध जर्मन सहयोग का ठोस आश्वासन प्राप्त करने का प्रयत्न किया। 5 जुलाई 1914 ई० को कैसर विलियम द्वितीय ने आस्ट्रिया को आने वाली हर परिस्थिति में पूर्ण सैनिक समर्थन देने का आश्वासन दे दिया। जर्मनी द्वारा अपने प्रत्येक कार्य का समर्थन प्राप्त हो जाने पर आस्ट्रिया ने आगे की घटनाओं को युद्ध की स्थिति तक धकेलने का निश्चय कर दिया। 23 जुलाई को आस्ट्रिया ने सर्बिया को अल्टीमेटम पत्र भेजा। इस पत्र की भाषा इतनी कठोर थी कि कोई भी स्वाभिमानी राष्ट्र कदापि स्वीकार नहीं कर सकता था। आस्ट्रिया ने सर्बिया को सेराजोवो हत्याकांड के लिए उत्तरदायी ठहराया। पत्र में कई शर्तें भी थीं। सर्बिया को आस्ट्रिया के विरुद्ध किए जाने वाले प्रचार को तत्काल समाप्त करने को कहा गया। हत्या की जाँच आस्ट्रियन अधिकारियों द्वारा करवाने और दोषी अधिकारियों

Scanned with CamScanner

को आस्ट्रिया के सुपुर्द करने की माँग की गई। इस पत्र का ~~उत्त~~ उत्तर 48
घंटों में माँगा गया। सर्बिया ने अधिकांश शर्तों पर अपनी स्वीकृति दे दी,
परन्तु दो शर्तें जिनके मानने से उसकी सत्ता और सम्मान को ठेस
पहुँचती थी, को मानने से इन्कार कर दिया। ~~इन शर्तों के सम्बन्ध में सर्बिया~~
~~ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का निर्णय स्वीकार करना मंजूर~~

आस्ट्रिया को जर्मनी का समर्थन प्राप्त था तो सर्बिया को
रूस का, परन्तु न तो जर्मनी और न ही रूस इस समय युद्ध छेड़ने के
पक्ष में थे। अतः जर्मनी और रूस दोनों ने सर्बिया के उत्तर को सन्तो-
षजनक मान लिया, परन्तु आस्ट्रिया अपनी बात पर अड़ गया। उसे
केवल कूटनीतिक विजय से ही सन्तोष न था, अतः उसने अपनी सेनाओं
को सर्बिया की सीमा की तरफ लामबन्दी (Mobilization) की आज्ञा दे दी।
इस पर रूस के जार ने आस्ट्रिया को चेतावनी दी कि अगर सर्बिया
पर आक्रमण किया गया तो रूस आस्ट्रिया के विरुद्ध प्रयाण करेगा।
इंग्लैंड के मन्त्री एडवर्ड ग्रे ने ~~स्थिती~~ स्थिति की नाजुकता को देखते
हुए तथा युद्ध को रोकने की दृष्टि से एक ~~अन्य~~ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन
की ~~माँग~~ माँग की, परन्तु जर्मनी ने इस माँग को ठुकरा दिया। कैसर
विलियम ~~का अभिप्राय था कि आस्ट्रिया~~ ने स्पष्ट कह दिया कि
आस्ट्रो-सर्ब समस्या दो राष्ट्रों का आपसी मामला है अर्थात
विलियम का अभिप्राय था कि आस्ट्रिया सर्बिया को समाप्त कर दे और
जर्मनी आस्ट्रिया की कार्यवाही पर निगरानी रखे और रूस अथवा किसी
अन्य शक्ति के बीच में आने पर उसे रोकने का प्रयास करे। विलियम
की घोषणा से रूस का जार उत्तेजित हो उठा और उसने रूसी सेनाओं
को लामबन्दी के आदेश दे दिए। अब जर्मनी भयभीत हो गया, क्योंकि
उसे विश्वास हो गया कि रूसी हस्तक्षेप से आस्ट्रो-सर्ब संघर्ष
स्थानीय न रहकर यूरोपीय बन ~~जायगा~~ जाएगा। अतः इसने आस्ट्रिया को
रूस से समझौता करने तथा इंग्लैण्ड के प्रस्ताव को मान लेने की राय
दी, परन्तु आस्ट्रिया युद्ध करने पर तुला हुआ था। 28 जुलाई, 1914
को आस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।